रिवाज...

दिवाली पर जुआ खेलना शुभ या अशुभ



दिवाली पर जुआ खेलने की प्रथा देश में सदियों से चली आ रही है। जुआ निसंदेह एक सामाजिक बुराई है। जुए के कारण हजारों परिवारों को उजड़ते और बर्बाद होते देखा गया है मगर जुआ आज भी दिवाली पर बेरोकटोक खेला जाता है और बहुत से लोग दिवाली पर जुआ खेलना शुभ मानते है। यह सर्वविदित है दिवाली की रात कई तरह की परंपराएं निभाई जाती हैं, जिससे पूरा परिवार एकसाथ हो जाता है। ऐसी कई परंपराएं होती हैं, जिससे दीपावली और भी खास हो जाती है। बहुत से लोग दीपावली की रात जुआ और पत्ते खेलते हैं क्योंकि वह मानते हैं कि दिवाली की रात शगुन की होती है। इसका मुख्य लक्ष्य वर्ष भर के भाग्य की परीक्षा करना है। हालांकि जुआ खेलना सामाजिक बुराई मानी जाती है और सरकार ने इस पर प्रतिबंध भी लगा रखा है लेकिन इस दिन जुआ खेलने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। मान्यता के अनुसार दिवाली पर भगवान् शिव और पार्वती ने जुआ खेला था तभी से यह प्रथा चली आ रही है हालाँकि इसकी कोई प्रमाणिकता किसी ग्रन्थ में नहीं है।

जुए में सब कुछ गंवाने की अनेक कथाएं मौजूद है इनमें प्रमुख रूप से पांडव अपनी पत्नी को हार बैठे थे से लेकर राजा नल, बलराम की कथाएं प्रचलित है। महाभारत में युधिष्ठिर ने जुआ खेलकर यही ज्ञान दिया कि यह बुराई की जड़ से इससे दूर रहना चाहिए। यह एक विनाशकारी नशा है।

जुआ एक अति प्राचीन खेल है। भारत में जुए का खेल अक्षक्रीड़ा या अक्षद्यूत के नाम से विख्यात है। वेद के समय से लेकर आज तक यह भारतीयों का अत्यंत लोकप्रिय खेल रहा है। जुआ का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा है। प्राचीन काल में यह राजा-महाराजा का खेल हुआ करता था। लोग इस खेल को सम्मान की नजर से देखते थे। नल और युद्धिष्ठिर ने जब जुआ खेला तो नल अपने साम्राज्य और पत्नीय को दाव पर लगाया था। पांडव और कौरव के बीच जुए के खेल में पांडव ने अपना साम्राज्य ही नहीं द्रोपदी को भी दाव पर लगा दिया था।

भारत में ऋग्वेद के समय से जुए का इतिहास मौजूद है। मुगल काल में शतरंज, गंजीफा और चौपड़ खेला जाता था। राजाओं के यहाँ खूब जुआ खेला जाता था। लोग सब कुछ लुटा कर दरिद्र हो जाते थे। जुए में हारने वाले चोरी जैसे अपराधों में लिप्त हो जाते थे। यही सब देख कर कबीरदास जी ने कहा- 'कहत कबीर अंत की बारी। हाथ झारि कै चलैं जुआरी।' इस्लाम में जुआ खेलना हराम कहा गया है, लेकिन इसके बावजूद अधिकांश मुस्लिम देशों में जुए पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लग सका।

जुआ एक ऐसा खेल है जिससे इंसान तो क्या भगवान को भी कई बार मुसीबतों का सामना करना पड़ा है। जुआ, सामाजिक बुराई होकर भी भारतीय मानस में गहरी पैठ बनाए हुए है। ताश के पत्तों से पैसों की बाजी लगाकर खेला जाने वाला खेल भारत में नया नहीं है। बस हर काल में इसके तरीकों में थोड़ा परिवर्तन आता रहा है। जुआ आज खेला जाता है और पहले भी खेला जाता रहा है।

बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार
डी .32, मॉडल टाउन, मालवीय नगर, जयपुर

कल पर क्यों टलती हैं हमारी छोटी-छोटी बातें?

मानव सभ्यता का इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े आविष्कार सुविधा के लिए हुए, लेकिन उन सुविधाओं के बीच इंसान ने जिस एक कला को सबसे अधिक निखारा है, वह है- 'टालमटोल'। पेंसिल मेज पर पड़ी है और उसका सही दिकाना ठीक सामने रखी अलमारी है। हाथ बढ़ाते तो दो सेकंड लगते, लेकिन अंतरात्मा से एक दार्शनिक आवाज गूंजती है- 'चलो, कल सुबह उठकर रख देंगे, अभी पेंसिल यहीं सुरक्षित है।' ठीक इसी तरह मेज पर रखे वे नोट्स, जिन्हें आज दुपहर पढ़ना था, शाम की चाय पर टलते हैं और शाम ढलते ही 'कल सुबह ब्रह्ममुहूर्त' के खाते में जमा हो जाते हैं। पंद्रह तारीख का पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम अठारह पर सरक जाता है। मजे की बात यह है कि इन सभी कामों को करने में न तो हिमालय चढ़ना था और न ही कोई रॉकेट साइंस लगनी थी; बस थोड़ा-सा मन और चंद मिनट चाहिए थे। मगर हमारा मस्तिष्क बहानों की ऐसी मीठी चाशनी तैयार करता है कि हम खुद ही अपनी बातों में आकर मुस्कुराते हुए काम आगे खिसका देते हैं।

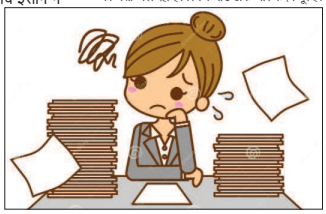

हमारे दैनिक जीवन में इसके इतने रंग-बिरंगे और मजेदार उदाहरण बिखरे पड़े हैं कि यदि उन पर शोध हो तो एक नया शोधग्रन्थ तैयार हो जाए। सर्दी के मौसम का ही उदाहरण ले लीजिए। बिस्तर में रजाई ओढ़कर लेटे हैं, नींद आँखों से कोसों दूर है, तभी ध्यान आता है कि कमरे की बत्ती जल रही है। स्विच बोर्ड ठीक चार कदम दूर है। अब दिमाग में विचारों का महायुद्ध शुरू होता है, 'क्या लाइट जलने से आँखों को कोई खास नुकसान होता है? अगर आँखें बंद ही हैं, तो कमरे में उजाला हो या अंधेरा, क्या फर्क पड़ता है?' और व्यक्ति लाइट बंद करने के बजाय तकिया खींचकर सोने की कोशिश करने लगता है, जबकि उठकर बटन दबाने में मात्र पांच सेकंड का समय लगता।

रसोई और खान-पान के मोर्चे पर तो यह टालमटोल अपने चरम पर दिखती है। चाय की प्याली खत्म हो चुकी है। सिंक केवल दस फीट दूर है, लेकिन प्याली वहीं लैपटॉप या सोफे के बगल में विराजमान रहती है। तर्क मिलता है, 'दुपहर बाद जब पानी पीने उठेंगे, तब साथ ही ले चलेंगे।' वह प्याली शाम तक वहीं जमी रहती है और धीरे-धीरे अपने साथ पानी का खाली गिलास और एक छोटी प्लेट भी जोड़ लेती है। फ्रिज में कटी हुई आधी गाजर या कटोरी में बची थोड़ी-सी चटनी इस इंतजार में सूख जाती है कि कोई उसे खाएगा, पर हर बार फ्रिज खोलने वाला उसे देखकर सोचता है, 'रात के खाने में खत्म कर देंगे।' नतीजा यह होता है कि वह सीधा कूड़ेदान की यात्रा करती है। तकनीक की दुनिया ने तो हमें टालने के असीमित औजार थमा दिए हैं। मोबाइल स्क्रीन पर 'सॉफ्टवेयर अपडेट' का संदेश पिछले तीन हफ्तों से रोज सुबह दस्तक देता है, लेकिन हमारी उंगलियां बिजली की गति से 'रिमाइंड मी टुमारो' पर क्लिक करती हैं। वही हाल अलार्म का है। चार बजे का अलार्म बजते ही पांच मिनट का 'स्नूज' दबाना एक ऐसा आत्मघाती सुख है, जो अंततः हमें सात बजे हड़बड़ाहट में बिस्तर से फेंकता है। फोन में आए किसी जरूरी संदेश का उत्तर देने के मामले में भी हम सोचते हैं, 'बस दो मिनट में तसल्ली से रिप्लाई करते हैं,' और वह दो मिनट अक्सर दो हफ्तों में परिवर्तित हो जाता है।

कपड़ों की अलमारी खोलते ही हैंगर से फिसली हुई शर्ट को तुरंत टांगने के बजाय हम उसे नीचे की रैक पर दबा देते हैं कि 'प्रेस करते वक्त ठीक कर लेंगे।' बाजार से आया सामान थैले से निकलकर मेज पर सज जाता है, मगर खाली थैला अपनी नियत जगह तक पहुंचने के लिए हफ्तों टेबल की शोभा बढ़ाता रहता है।

प्रश्न यह है कि आखिर हम ऐसा करते क्यों हैं? मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो मस्तिष्क हमेशा ऊर्जा बचाने की फिराक में रहता है। इसे 'प्रेजेंट बायस' कहा जाता है, जहाँ हमारा वर्तमान मस्तिष्क तुरंत मिलने वाले आराम को भविष्य के उस सुकून पर तरजीह देता है जो काम के पूरा होने पर मिलता। छोटी-छोटी बातों को टालने के पीछे कोई बहुत बड़ा डर नहीं होता है। यह एक सूक्ष्म आलस्य और झूठा विश्वास होता है कि 'आने वाला कल' आज की तुलना में ज्यादा फुर्सत भरा, ज्यादा ऊर्जावान और ज्यादा अनुकूल होगा। हम यह भूल जाते हैं कि कल जब आज बनकर आएगा, तो वह भी अपने साथ वही थकान, वही बहाने और वही प्रलोभन लेकर आएगा। त्रासदी यह नहीं है कि पेंसिल अलमारी में नहीं पहुंची या नोट्स शाम को नहीं पढ़े गए। असली नुकसान उस मानसिक बोझ का है जो इन छोटे-छोटे टले हुए कामों से पैदा होता है। मनोविज्ञान में इसे 'ज़िगार्निक प्रभाव' कहा जाता है, हमारा दिमाग अधूरे और लंबित कामों को एक खुली फाइल की तरह बैकग्राउंड में चलाता रहता है। इस प्रभाव की खोज रूसी मनोवैज्ञानिक ब्लूमा जिगार्निक द्वारा 1920 ई0 में होटल के वेटरों पर प्रयोग के दौरान किया गया था। मेज पर रखी वह एक अकेली पेंसिल, वह अनपढ़ा पन्ना, वह अपूर्ण संदेश और वह अग्रहर तारीख पर टला हुआ आयोजन अवचेतन में लगातार एक हल्का तनाव पैदा करते हैं। जब ऐसे बीस छोटे-छोटे काम एक साथ जमा हो जाते हैं, तो व्यक्ति बिना कोई बड़ा काम किए भी शाम को भारी थकान महसूस करता है।



इस चक्रव्यूह को तोड़ने का उपाय बहुत सरल है, 'दो मिनट का नियम'। यदि किसी काम को करने में दो मिनट या उससे कम समय लगता है, तो उसके लिए सोचना, योजना बनाना या उसे कल पर टालना पूरी तरह वर्जित होना चाहिए। पेंसिल दिखी, तो हाथ बढ़ाया और रख दिया। चाय की प्याली उठी, तो तुरंत सिंक में पहुंचा दी। नोट्स पढ़ने हैं, तो यह सोचे बिना कि पूरी किताब खत्म करनी है, बस पहला पन्ना पलट लिया, आप उसे अवश्य पढ़ पाएँगे।

जीवन इन्हीं नन्हीं-मुन्नी क्रियाओं का ताना-बाना है। जिस दिन हम अपनी रोजमर्रा की इन छोटी-छोटी बातों पर जीत हासिल कर लेते हैं, उस दिन बड़े संकल्प अपने आप सधने लगते हैं। इसलिए अगली बार जब मन कहे कि 'चलो, कल रख देंगे', तो ठहरकर खुद से इतना ही कहिए, 'कल की बात कल देखेंगे, फिलहाल यह काम अभी और यहीं खत्म करते हैं।'

दुर्गेश्वर राय
(लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संयोजक हैं)
संपर्क : 7905664495

आगे की राह आसान हो जाती है

असम के शिवसागर जिले के एक छोटे-से गाँव में नीलोत्पल नाम का एक युवक रहता था। उसके सपने बड़े थे, मगर परिस्थितियाँ हमेशा उसके हौसलों की परीक्षा लेती रहती थीं। पिता की छोटी-सी चाय की दुकान थी और घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह अपनी इच्छाओं को आसानी से पूरा कर सके।



नीलोत्पल अक्सर ब्रह्मपुत्र के किनारे बैठकर दूर तक बहते पानी को देखा करता था। उसे लगता था कि नदी की तरह जीवन भी कभी शांत तो कभी अशांत रहता है। लेकिन नदी अपना रास्ता बनाना नहीं छोड़ती।

एक दिन उसने गुवाहाटी जाकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने का निर्णय लिया। परिवार ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसकी मदद की। माँ ने उसे समय बस इतना कहा, 'बेटा, रास्ते में कितनी भी मुश्किलें आएँ, अपने इरादों को कमजोर मत होने देना।'

शुरुआत में सब कुछ अच्छा रहा, लेकिन कुछ महीनों बाद आर्थिक तंगी, असफलता और अकेलेपन ने उसे भीतर तक तोड़ना शुरू कर दिया। पहली परीक्षा में वह असफल हुआ, दूसरी में भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिला। उसके कुछ मित्रों ने सलाह दी कि वह अपने गाँव लौट जाए और कोई छोटा-मोटा काम शुरू कर दे।

एक शाम निराश होकर वह अपने कमरे में बैठा था। तभी गाँव से उसके पिता का फोन आया। पिता ने बताया कि दुकान पर आने वाला एक बुजुर्ग ग्राहक रोज कहा करता है कि चाय की छोटी-सी दुकान भी किसी बड़े सपने की शुरुआत हो सकती है, बशर्ते आदमी मेहनत करना न छोड़े।

पिता की यह बात उसके दिल में उतर गई।

अगली सुबह उसने अपनी असफलताओं का हिसाब लगाने के बजाय अपनी कमियों को सुधारने का संकल्प लिया। उसने समय का बेहतर उपयोग किया, नियमित अध्ययन शुरू किया और हर असफलता को एक नया सबक मानकर आगे बढ़ता रहा।

एक वर्ष बाद परिणाम आया। इस बार नीलोत्पल सफल हो चुका था। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। उसने सबसे पहले माँ को फोन किया। माँ कुछ क्षण खामोश रही, फिर बोली, 'देखा बेटा, रास्ते कभी अपने आप आसान नहीं होते, उन्हें हमारी मेहनत आसान बनाती है।'

कुछ दिनों बाद नीलोत्पल गाँव लौटा। ब्रह्मपुत्र के उसी किनारे बैठकर उसने बहती नदी को देखा। अब उसे समझ आ चुका था कि जीवन में मंजिल तक पहुँचने से अधिक महत्त्वपूर्ण है, रास्ते में स्वयं को बेहतर बनाते रहना।

उसने मन ही मन कहा—जब इंसान अपने भीतर के भय को परास्त कर लेता है, परिस्थितियों से समझौता करने के बजाय उनका सामना करता है और निरंतर कर्म करता रहता है, तब आगे की राह धीरे-धीरे आसान होती जाती है। जीवन का सार यही है कि कठिन रास्ते हमारी परीक्षा लेने नहीं, बल्कि हमारी क्षमता को पहचानने का अवसर देने आते हैं। मंजिल उन्हीं को मिलती है, जो ठोकरों के बावजूद चलना नहीं छोड़ते।

डॉ. अशोक, पटना, बिहार

मकस ने दिवाली और शिखा गोस्वामी के जन्मदिन पर किया कवि सम्मेलन

छत्तीसगढ़। मकस कहानिका के छत्तीसगढ़ अध्याय द्वारा 07 नवंबर 2026, शनिवार को केंद्रीय मीडिया प्रभारी डॉ. शिखा गोस्वामी के जन्मदिन एवं दीपावली के पावन अवसर पर 'दिवाली की जगमग' विषय पर एक भव्य अंतरराष्ट्रीय आभासी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। संध्या 6 बजे से आयोजित इस साहित्यिक समारोह में देश-विदेश के अनेक साहित्यकारों एवं कवियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंच कविता चौपाटी, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के राजेंद्र मौर्य उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में दुबई से अंतरराष्ट्रीय संयोजक जय कृष्ण मिश्रा तथा आबूधाबी से अंतरराष्ट्रीय सह-संपादक सत्येंद्र नाथ गुप्त जुड़े। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं संयोजन कहानिका हिंदी पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. श्याम कुंवर भारती ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. विभा तिवारी ने किया। सरस्वती वंदना शुभ्रा शुक्ला, रायपुर द्वारा प्रस्तुत की गई। देवी गीत डॉ. श्याम कुंवर भारती ने प्रस्तुत किया, वहीं स्वागत भाषण अशिका श्रीवास्तव ने दिया।

कवि सम्मेलन में दिलीप टिकरिहा 'छत्तीसगढ़िया' (पिरदा, भिंभौरी, बेरला-बेमेतरा), शायर नवेद रज़ा दुर्गवी (दुर्ग), नीरू, डॉ. दिवाकर पाठक (हजारीबाग, झारखंड), यामिनी, सविता गुप्ता, नन्द किशोर मिश्र, अशिका श्रीवास्तव (जौनपुर), डॉ. श्याम कुंवर भारती, जय कृष्ण मिश्रा, स्वरूपा, शुभ्रा शुक्ला, डॉ. शिखा गोस्वामी एवं डॉ. विभा तिवारी ने अपनी मनमोहक काव्य प्रस्तुतियों से दीपावली के उल्लास, प्रेम, सौहार्द, खुशियों और जीवन के विविध रंगों को शब्दों में पिरोया।

सभी कवियों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाई और अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक वातावरण को भावपूर्ण एवं उल्लासमय बना दिया। इस अवसर पर सभी साहित्यकारों एवं उपस्थित सदस्यों ने डॉ. शिखा गोस्वामी को जन्मदिन की हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ दीं। साथ ही दीपावली के पावन पर्व पर सुख, समृद्धि, शांति और खुशहाली की मंगलकामनाएँ भी प्रेषित कीं।

आत्म चिंतन

संसार मोह माया का जाल



संसार के माया जाल में हम इतनी बुरी तरह फँसे हुए हैं कि... इतना भटकने के बाद भी कुछ नहीं मिला और कुछ मिलेगा भी नहीं।

सत्य को कहने के लिए किसी शपथ की आवश्यकता नहीं होती नदियों को बहने के लिए किसी मार्ग की आवश्यकता नहीं होती जो बहते हैं संसार में अपने सुदृढ़ मंतव्य के बल, उन्हें अपने गंतव्य पाने के लिए किसी रथ की आवश्यकता नहीं होती। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं। जय जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

गुरू सूबेदार रावत गर्ग उण्डू 'राज' बाड़मेर

संस्मरण : अहमदाबाद की दिपावली



अहमदाबाद की दिवाली
मेरी जिंदगी में आए हो तुम
बन कर दीपोत्सव का उजास
मेरे मन में सदा तुम रहना
बन कर प्रकाश ...!!
दिवाली की यादें वो सारी बातें
कैसे लिखूं
वो प्यारी प्यारी खूबसूरत एहसासे
पहले साधन कम थी और साधना अधिक
सुकून और शांति तो दोगुनी
चौगुनी हुआ करती थी।
अब साधन अधिक है और
साधना तनिक तथा सुख शांति
और खुशियां तो क्षणिक
हो कर रह गई है।।

आपको याद है वो दिवाली उस वक्त ना चिंता थी ना कोई फ़िक्र थी बस प्रेम अपनापन और खुशियां थी।? आपको पाकर तो मेरे कदम जमीं पर पड़ते ही नहीं थे।? हां ये अलग बात थी कि मैं आज की तरह उस वक्त अपनी भावनाओं का व्याख्यान नहीं कर पाती थी मगर सच तो ये है कि मैं स्वयं को दुनिया की सबसे भाग्यशाली स्त्री समझती थी।

आपका प्रेम स्नेह और साथ पाकर मेरा मन भीतर से आनंदित हो गया था। ऐसा लगता था जैसे मैं सर्वश्रेष्ठ चोटी पर हूं मगर कभी आप से कह नहीं पाई।? मुझे ऐसा लगता था आप मेरे कहे बिना ही ये सब जान लेते हो।

आपको पता है आपके साथ मैं उस तरह से जी पाती हूं

जैसे मुझे जीना होता है मैं बिल्कुल बच्ची बन जाती हूं और आप मेरी सारी नादानियां सारा बचपना संभाल लेते हो। मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी ताकत सबसे बड़ी कमाई सबसे बड़ी पूंजी और इन सबसे बढ़ कर मेरा आत्मविश्वास आप हो हर सुख हर मुस्कान मेरी आप हो मेरे जीने की उम्मीद मेरी दुनिया मेरी सम्पूर्ण सृष्टि आप हो। मैंने कभी सोचा नहीं था मुझे आप से इस कदर प्यार होगा मगर आज हालात ये हैं कि आपके बगैर सपने में भी मैं जीवन की कल्पना नहीं कर सकती। परेशान होती हूं आपके लिए तो गुस्सा भी आप से ही होती हूं।

बहुत प्यार करती हूं आप से शायद इतना कि मेरे लिए उसे शब्द देना मुमकिन नहीं। मुझे मेहसूस करो आप मेरी रक्त की धाराओं में बहते हो मेरी हर सांस में सिर्फ आप हो।मेरे मन मंदिर में आप हो मैं जिसे पूजती हूं चाहती हूं मानती हूं मांगती हूं वो आप हो ? । जिंदगी की हर खुशी आप हो। मेरा ये रुप रंग और नवजीवन सब आप का ही दिया हुआ है। जब भी मैं कहीं बाहर जाती हूं ,लोगों से मिलती हूं तो लोग मुझ से पुछते है कि मैं कौन सी कम्पनी में काम करती हूं तो मन ही मन मैं सोचने लगती हूं क्या खूब पर्सनालिटी मेरा बनाया आप ने और जब उन्हें ये बताती हूं कि मैं अब जाब नही करती बल्कि एक होम मेकर हूं तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता है और उनके माथे की शिकन को देख कर मुझे आपकी रचनात्मकता पे गर्व होता है ।।

मैं वैसी नहीं जैसी आपको पसंद है मगर मैं जैसी भी बस आप ही की हूं ।।

आप मेरी जिंदगी में उजास बन कर आए हो? इसलिए आज से मैं आपको उजास कह कर बुलाऊंगी ।।

आपको याद है उन दिनों आपकी पोस्टिंग अहमदाबाद में थी वहां कितना बड़ा घर था हमारा और हम दोनों ने मिल कर उस घर को कितने प्यार से सजाया था । दीए की रौशनी में जगमगाता वो घर आज भी मेरे आंखों के आगे वैसे का वैसा ही आ जाता है । उस दिन हमलोगों ने खाने के लिए कितना कुछ बनाया था और सबसे अच्छी तो फिरनी बनी थी । मैंने फिरनी पहली बार ही बनाया था पर वो बहुत अच्छा बना था । आप ने भी तो खूब खाया था । जब हमलोग लक्ष्मी पूजन के बाद खाने के लिए बैठे थे तो इतने सारे व्यंजन पकवान देख कर हमारी तो हंसी छुट गई थी । खाने? वाले हम दो और खाना इतना सारा? ..!! हम खाए जा रहे थे खाएं जा रहे थे और खाना खत्म ही नहीं हो रहा है ।?उस रात हम कितना हंसे थे मुझे तो याद भी नहीं कि उससे पहले मैं कभी इतना खुल कर हंसी भी थी ।

धनवंतरी जी का सर पे हाथ रहे,
लक्ष्मी जी सदा घर में वास करें
मन का हर खाली कोना खुशियों से भरे
अब की दीवाली कुछ ऐसे मने
भूले बिसरे सभी एक साथ मिले
आओ प्रेम का कुछ ऐसा हम आगाज करें
दूर हो अंधेरा मन का
प्रेम का उजास हम भरे
हर घर दीप जलें
मन का विकार हटे
जीवन धन धान्य खुशियों से सजे
मां लक्ष्मी के आशीर्वाद से जीवन में
सुख शांति समृद्धि आयु आरोग्य सब मिले ।।
आप सभी को दीपावली की बहुत बहुत बहुत शुभाकामनाएं ।।

किरण काजल बेंगलुरु

शब्द प्रहार...

